बत तीन वर्षों में कितने मूल्य के तथा कितने मीटर लम्बे पाइपों तथा ट्यूबों जैसे सामान की जरूरत पड़ी;

(ख) टाटा ग्रुप, इंडियन ट्यूब कम्पनी, टाटा स्टीवर्ट तथा लायड द्वारा कितने प्रतिशत उक्त सामान की सप्लाई की गई; और

(ग) टाटा द्वारा किए जा रहे उत्पादन के अतिरिक्त "समिलेस कोल्ड रोल्ड" ट्यूबों का उत्पादन बढ़ाने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं ?

पेट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्री (श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : (क) और (ख) सूचना एकत्र की जा रही है और सभा पटल पर रख दी जाएगी ।

(ग) सीमलेस स्टील ट्यूब (कार्बन और अलाय स्टील) के निर्माण के लिए 3 लाइसेंसधारी यूनिटें हैं । इन यूनिटों नीचे दी गई क्षमताएं स्थापित कर ली हैं और उत्पादन आरम्भ कर दिया है :—

	लाइसेंसीकृत क्षमता (मी.टन)
मै. आई. टी. सी.	55,000
मै. बी. एच. ई. एल.	40,000
मै. इंडियन सीमलस मैटल	15,000

इस के अलावा सरकारी क्षेत्र में एक यूनिट जिस का नाम, मै० न्यूक्लियर फ्यूल कम्पलेक्स है, ने सीमलेस स्टनलैस स्टील, सीमलेस एलाय स्टील तथा सीमलेस वीयरिंग ग्रेड ट्यूब–पाइपों की क्रमश: 2000 टन, 3000 टन तथा 21000 टन प्रतिवर्ष क्षमता स्थापित की है । इस यूनिट में हालांकि केवल सीमलेस स्टेनलेस स्टील ट्यूब का उत्पादन प्रारम्भ हुआ है । इस के अतिरिक्त 5000 टन सीमलेस स्टील ट्यूब वार्षिक क्षमता के लिये मै. गुजरात औद्योगिक निवेश निगम को एक आशय पत्र प्रदान किया गया है ।

उर्वरक तथा कृषि अनुसंधान विक के लिए विभिन्न राज्यों में जिलों चयन

3948. श्री निहाल सिंह : क्या पेट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या केन्द्र सरकार ने देश के विभिन्न राज्यों के जिलों में, ब्रिटेन की सहायता से उर्वरक तथा कृषि अनुसन्धान विकास के लिए 23 जिलों का चयन किया है; और

(ख) यदि हां, तो उन जिलों के क्या नाम हैं और उक्त प्रयोजन के लिए प्रस्तावित कार्यक्रमों तथा उन पर खर्च की जाने वाली राशि का जिला वार ब्यौरा क्या है ?

पेट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बलवीर सिंह) : (क) और (ख) एक उर्वरक शिक्षण योजना छः राज्यों के चुने हुए 25 जिलों में यूनाइटेड किंगडम सरकार की सहायता से कार्यान्वित की जा रही है । कार्यक्रम का उद्देश्य है– कृषि उत्पादन बढ़ाना उर्वरकों के संतुलित और वैज्ञानिक प्रयोग को बढ़ावा देना और उर्वरकों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये उर्वरक भंडारन स्थापित करना ।

जिलों और राज्य के नाम निम्न प्रकार हैं :—

असम, डिब्रूगढ़, सिबसागर, गोआलपारा और दरांग ।

बिहार, सारण, मधुबनी, मुंगेर और संथाल परगना ।

उड़ीसा, पुरी, कटक, कालाहा ण्डी और मयूरभंज ।

मध्य प्रदेश : बालाघाट, बस्तर, मन्दसौर, ग्वालियर और छतरपुर ।

उत्तर प्रदेश : प्रतापगढ़, बस्ती, इटावा और जालौन ।

पश्चिम बंगाल : पुरुलिया, मालदा, जलपाईगुडी और कूचबिहार ।

पांच वर्षों की अवधि में प्रत्येक जिले में होने वाला खर्च लगभग 88 लाख रुपये है ।

Coal Production Colliery-wise

3949. SHRI N.E. HORO: Will the Minister of ENERGY be pleased to state:

(a) what is the total coal production colliery-wise during the year 1979-80;

(b) what percentage of the requirements of the States and the industries have been met so far;

(c) the number of wagons and trucks used for transportation of coal during the above period; and

(d) the target of coal production set for 1980-81 and 1981-82?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF ENERGY (SHRI VIKRAM MAHAJAN): (a) A statement indicating colliery-wise production is laid on the table of the House. (Placed in library. See no. LT-1632/80).

(b) The demand of coal in 1980-81 has been assessed at 119.8 million tonnes by the Planning Commission. In April-October 1980, 59.61 million tonnes of coal were despatched to the consumers, which is about 50 per cent of the demand for the year.

(c) In April-October, 1980, daily average wagon loading was about 8140. The movement of coal by road was about 1.98 million tonnes/month.

(d) A coal production target of 113.5 million tonnes for 1980-81, was finalised in consultation with Planning Commission. The coal production target for 1981-82 is being finalised in consultation with Planning Commission.

बरौनी उर्वरक संयंत्र का बन्द किया जाना

3950. श्री राम सिंह शाक्य
श्री हीरालाल और० परमार

क्या पेट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या बिजली की कमी के कारण बरौनी उर्वरक संयंत्र बंद कर दिया गया है ;

(ख) क्या सितम्बर,–नवम्बर, 1980 के दौरान बिजली की कमी के कारण इस संयंत्र को 12 बार बंद करना पड़ा था;

(ग) क्या सरकार अपेक्षित कच्चे माल की सप्लाई को बनाए रखने में भी असफल हुई थी; और

(घ) यदि उपरोक्त भागों का उत्तर सकारात्मक है तो बरौनी उर्वरक संयंत्र को शीघ्र फिर से चालू करने के लिए क्या उपाय किये जा रहे हैं ;

पेट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दलबीर सिंह) : (क) से (घ) अस्थिर बिजली सप्लाई के कारण बरौनी उर्वरक प्लांट सितम्बर और अक्तूबर, 1980 के दौरान बन्द रहा । उस अवधि के दौरान कच्चे मालों की कमी नहीं थी । बिहार राज्य बिजली बोर्ड द्वारा बिजली सप्लाई किये जाने पर । नवम्बर, 1980 से प्लांट फिर से चालू हुआ । फिलहाल प्लांट उत्पादन कर रहा है ।